कैंसर के इलाज में तंबाकू के उपयोग का सच

प्रमोद भार्गव

तंबाकू खाने के पक्ष में आया नवीनतम शोध हैरानी में डालने वाला है। इस शोध में नई आवधारणा गढ़ी गई है कि तंबाकू के पौधों में पाया जाने वाला एक अणु मनुष्य में वजूद जमा चुकी कैंसर कोशिकाओं को खत्म करने में उपयोगी है। अर्थात अब तक जिस तंबाकू को कैंसर का जनक माना जाता था, वही तंबाकू कैंसर के इलाज में प्रतिरोधी दवा के रूप में काम करेगी। वैसे माना जाता है कि तंबाकू दुनिया भर में प्रत्यक्ष रूप से 40 लाख लोगों की जान लेती है। ऐसे में क्या यह शोध तंबाकू कंपनियों ने अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए प्रायोजित ढंग से कराया है, यह आशंका पैदा होना स्वाभाविक है।

ट्रोब विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट फॉर मॉलीक्यूलर सांइस के वैज्ञानिकों ने तंबाकू के पौधों के फूल में इस अणु की पहचान की है। इसमें कवक और विषाणु प्रतिरोध के अलावा कैंसर कोशिकाओं की पहचान करने और उन्हें मारने की क्षमता भी है। इस अणु को एनडी-1 नाम दिया गया है। शोध के परिणाम का प्रकाशन *ई-लाइफ जर्नल* में किया गया है। प्रमुख शोधकर्ता मार्क हुलेट ने कहा है कि इसमें एक खास पदार्थ विकसित होता है। जिसके निशाने पर केवल कैंसर रहता है। जबकि स्वस्थ कोशिकाएं बेअसर रहती हैं।

तंबाकू या धूम्रपान के पक्ष में यह कोई पहला शोध नहीं है। धूम्रपान से शारीरिक हानि कम दिखे, इसके लिए वैज्ञानिक और बुद्धिजीवियों को तंबाकू कंपनियां प्रायोजित ढंग से ललचाती हैं। दवा कंपनियां ऐसे शोध को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे लोग खूब धूम्रपान करें और बीमार हों।

इस संदर्भ में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के साथ एक अध्ययन कोलेरैडो की एन लैंडमैन ने प्रकाशित किया है। 80 लाख दस्तावेज़ी साक्ष्य लीगेसी तंबाकू दस्तावेज़ पुस्तकालय से प्राप्त हुए हैं। इन दस्तावेज़ों के अध्ययन से पता चला कि लोगों के दिल-दिमाग पर असर डालने की दृष्टि से तंबाकू कंपनियों ने अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों, समाज विज्ञानियों और वैज्ञानिकों की गोलबंदी की और धूम्रपान के पक्ष में ज़ोरदार मुहिम छेड़ दी गई। कैंसर के पक्ष में आया ताज़ा शोध भी इसी की अगली कड़ी लगता है।

इस अध्ययन के मुताबिक मनोवैज्ञानिक हैंस आइसेन्क और दार्शनिक रॉजर स्क्रटन इस नेटवर्क से जुड़े थे। यह नेटवर्क 1970 में वजूद में आया था। यही वह समय था, जब धूम्रपान के खतरों पर गंभीर व व्यापक बहस की शुरुआत हुई थी। दस्तावेज़ बताते हैं कि दुनिया की 7 प्रमुख सिगरेट कंपनियों की एक बैठक 1977 में हुई थी, जहां परस्पर सहयोग से काम करने का फैसला लिया गया था। दलील दी गई थी कि धूम्रपान से लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं। यानी धूम्रपान के सामाजिक लाभ हैं। हैंस आइसेन्क ने बताया कि तंबाकू से जुड़ी बीमारियां आनुवंशिक कारणों से होती हैं।

इसी तरह 1985 में एक किताब '*स्मोकिंग एंड सोसाइटीः*

वर्ग पहेली 116 का हल

मो	ल		सु	प	र	नो	वा	
ह		का		ट			य	ति
न	क्शा	न	वी	स		श्र	व्य	
जो				न		व		अ
द	ल	पुं	ज		र	ण	नी	ति
ड़ो		स		अ				चा
	स	त्व		गु	रु	त्व	ब	ल
क्षा	र			णि		चा		क
	स	मु	द्र	त	ल		ल	ता

टूवर्ड्स ए मोर बेलेंस्ड पर्सपेक्टिव' (समाज और धूम्रपानः एक संतुलित नज़रिया) शीर्षक से छपी थी। इस किताब को लिखने और प्रकाशित करने का पूरा खर्च तंबाकू उद्योग ने उठाया था, लेकिन इस सहयोग का किताब में कहीं उल्लेख नहीं था। इसी तर्ज़ पर 1998 में रॉजर स्क्रटन ने *दी टाइम्स* में धूम्रपान के पक्ष में एक बेहद शर्मनाक और हस्यास्पद तर्क दिया था कि धूम्रपानी लोग स्वास्थ्य सेवाओं पर कम दबाव डालते हैं, क्योंकि वे जल्दी मर जाते हैं। बाद में पता चला कि स्क्रटन को जापान टोबेको इंटरनेशनल से सालाना मानदेय मिलता था। तंबाकू कंपनियों ने 1990 के दशक में 50 लाख डॉलर देकर - 'एसोसिएट्स फॉर रिसर्च इन टू दी सांइस ऑफ एन्जॉयमेंट' की स्थापना कराई। यह संस्था स्वास्थ्य में शुद्धतावाद के खिलाफ प्रचार मुहिम चलाती थी।

कुछ समय पहले कई शोध पत्रिकाओं ने निर्णय लिया था कि वे तंबाकू कंपनियों से धन लेकर किए जा रहे शोध के निष्कर्ष प्रकाशित नहीं करेंगी, क्योंकि ये संदिग्ध होते हैं। इस फैसले में अग्रणी पत्रिका *प्लॉस मेडिसन* रही है। इसके संपादक जिनी बार्बोर का कहना था कि वे उन हालातों और कारकों को प्राथमिकता देंगे, जो सबसे ज़्यादा बीमारियों का कारण बनते हैं। ज़ाहिर है, तंबाकू बीमारियों की बड़ी कारक है, क्योंकि इसके सेवन से हर साल 40 लाख लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं। इस सोच में *प्लॉस वन*, *प्लॉस बायोलॉजी*, *ब्रिटिश जर्नल ऑफ कैंसर* और *अमेरिकन थॉरेसिक सोसाइटी जर्नल* भी शामिल हैं।

शोध पत्रिकाओं के इस फैसले पर यह सवाल उठाया गया था कि नई दवाओं के परीक्षण अक्सर दवा कंपनियों के पैसे से होते हैं। इस धन से होने वाले क्लीनिकल ट्रायल में कंपनी के पक्ष में नतीजे तय करने की उम्मीद ज़्यादा होती है। लिहाज़ा, केवल तंबाकू कंपनियों के शोधों के परिणामों पर प्रतिबंध लगाने का फैसला क्यों लिया गया? इस सवाल के जवाब में बार्बोर का मत है कि कंपनियों द्वारा दवाइयों के परीक्षण में जटिलताएं तो हैं, किंतु दवा उपचार में लाभदायी भी हो सकती हैं, यह उम्मीद भी बनी रहती है, लेकिन तंबाकू का इस्तेमाल तो हमेशा ही हानिकारक होता है, इसमें कोई संदेह ही नहीं है। इसलिए तंबाकू का मामला भिन्न है। लिहाज़ा तंबाकू से कैंसर ठीक होने का जो शोध हुआ है वह शंका के घेरे में है। नतीजतन इस शोध के परिणामों को यदि प्रोत्साहित किया गया तो तंबाकू का सेवन बढ़ेगा जिसका असर मानव स्वास्थ्य के लिए घातक साबित होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जुलाई 2014
अंक 306

- **अनाज की बर्बादी के आंकड़ेः क्या छिपा है कोई राज़?**
- **चार सजीवों की अनोखी सहजीविता**
- **विमान के पहिए में बच्चे का जीवित रहना**
- **धरती के बाहर पानी के साक्ष्य**
- **बेअसर होती एंटीबायोटिक दवाएं**